एक शहर, दो भाई

यरूशलेम शहर की कहानी

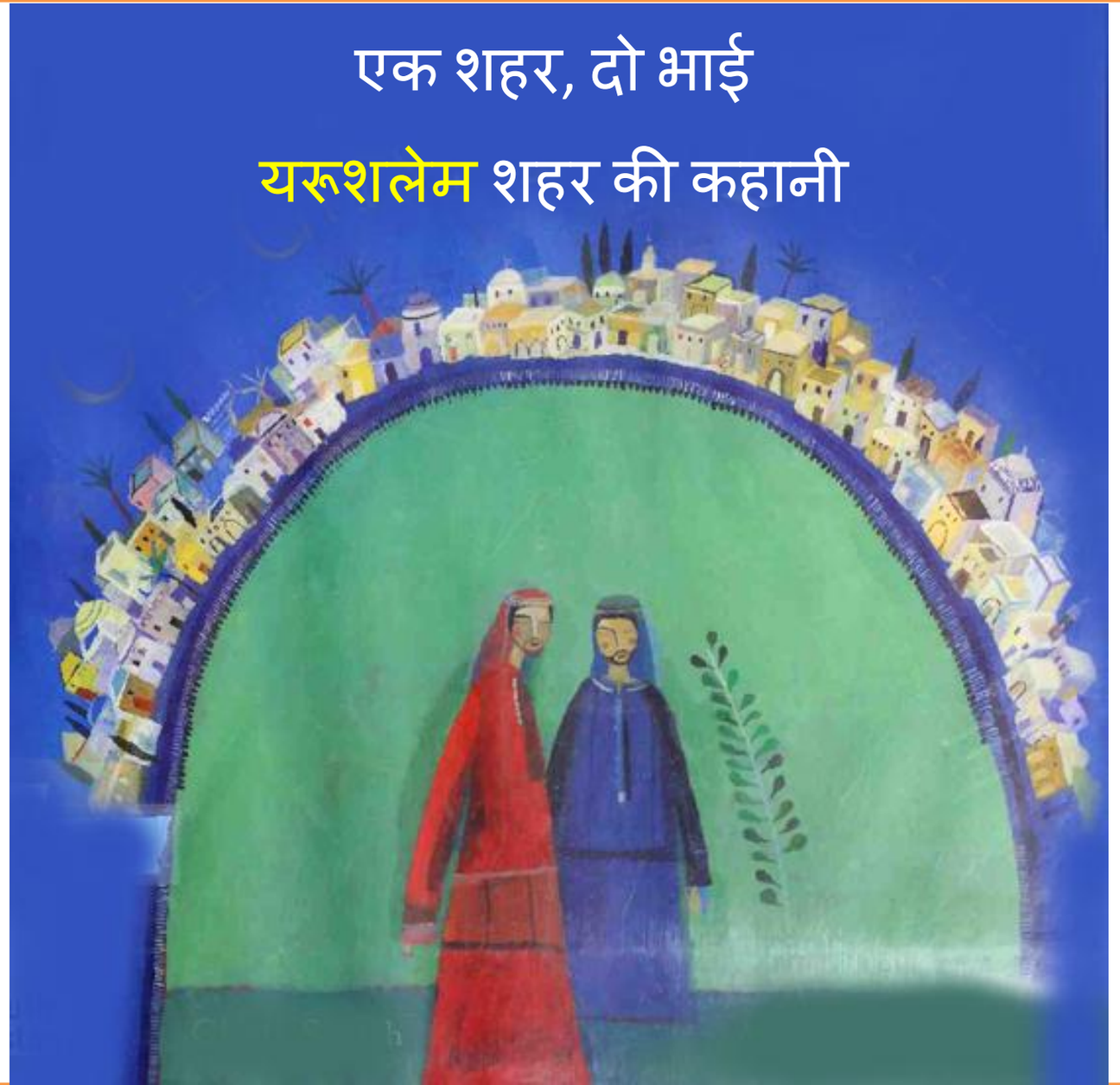

एक शहर, दो भाई

यरूशलेम शहर की कहानी

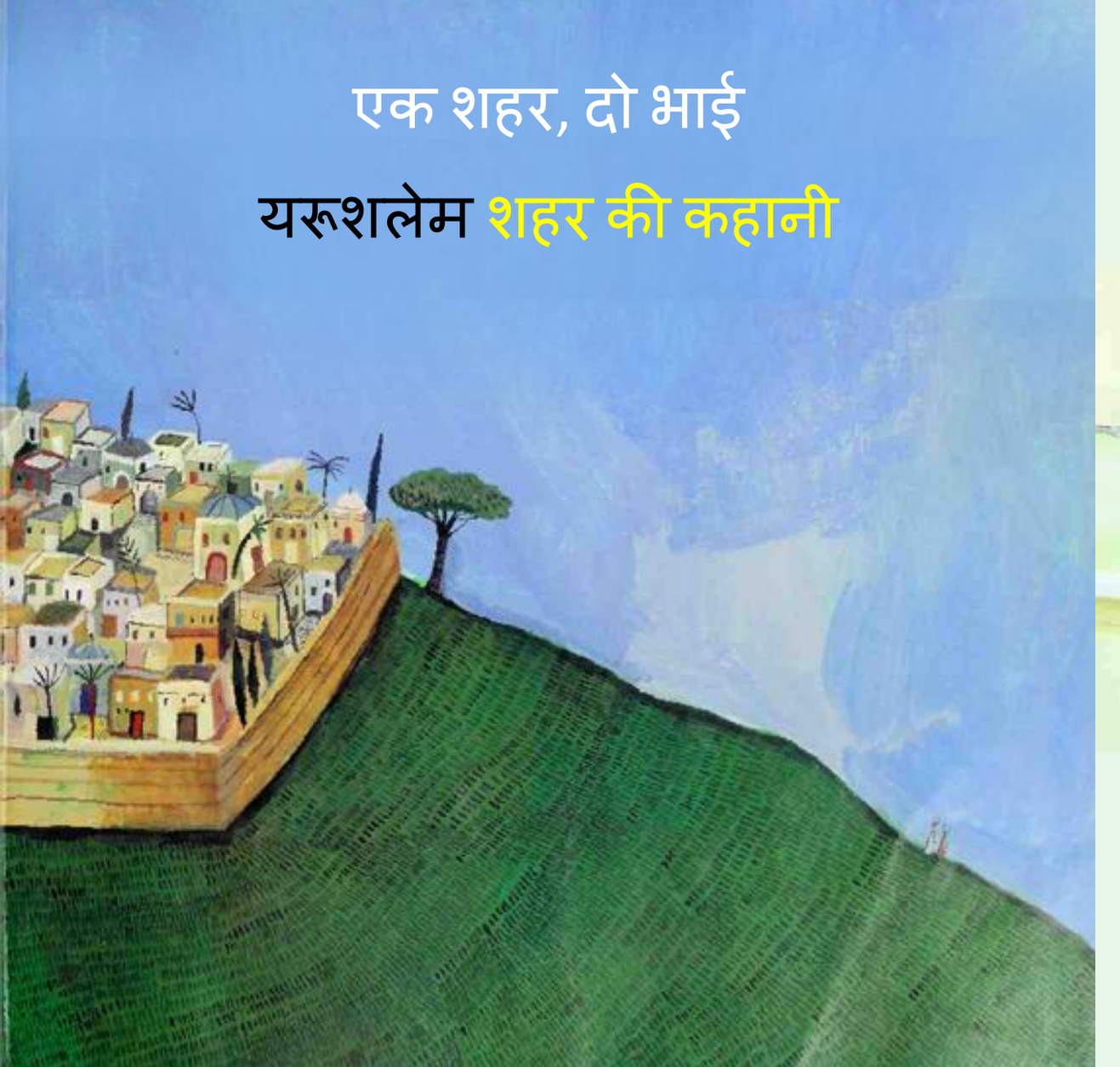

यह बात तब की है जब बुद्धिमान राजा सुलैमान का यरूशलेम शहर पर शासन था. उन्होंने शहर में एक शानदार मंदिर बनवाया - लोगों के लिए एक विशेष और पवित्र स्थान. हर दिन राजा अपने महल में बैठते और आने वाले लोगों से मिलते थे. राजा लोगों का मार्गदर्शन करते थे और जो लोग कानून तोड़ते थे उन्हें सजा सुनाते थे.

एक दिन दो भाई राजा के महल में आए. उनके पिता का हाल ही में निधन हुआ था. दोनों भाई इस बात पर बहस कर रहे थे कि परिवार की जमीन किसको मिले. वे सलाह-मशवरे के लिए राजा के पास आए थे.

"कायदे से ज़मीन मेरी होनी चाहिए!" एक ने कहा.

"यह उचित है कि मुझे मेरा हिस्सा मिले!" दूसरा चिल्लाया.

बुद्धिमान राजा ने कुछ देर तक उनकी बहस सुनी. जब तू-तू, मैं-मैं बहुत बढ़ी तब राजा ने भाइयों से चुप रहने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाया.

"चलो मैं आप लोगों को एक कहानी सुनाता हूं," उन्होंने कहा, "बहुत पहले, यहां पर शहर और मंदिर बनने से भी पहले ..... "

फिर सोलोमन ने वो कहानी सुनाई.

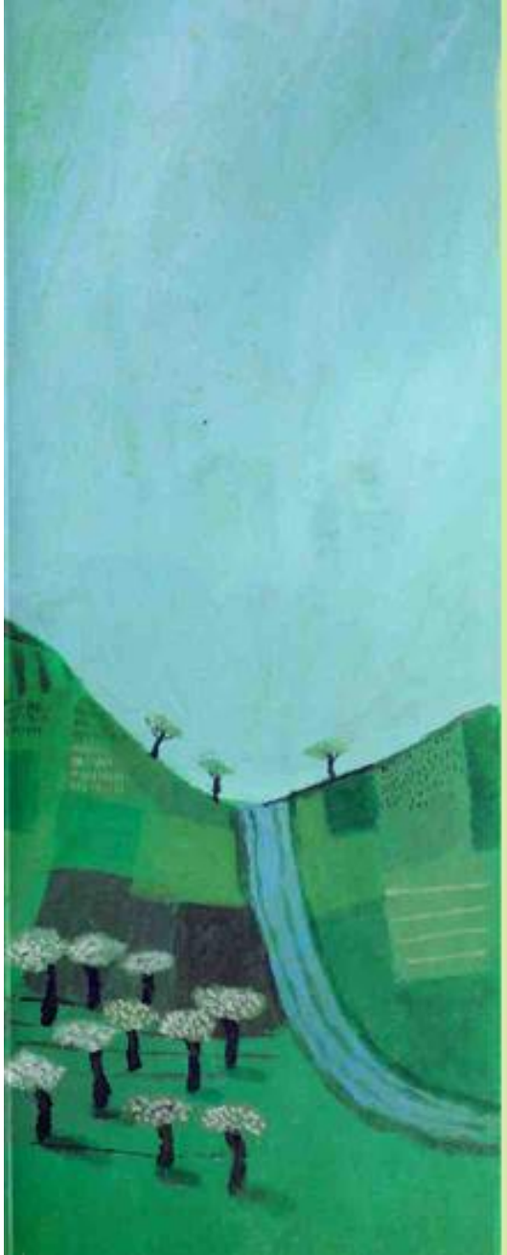

बहुत पहले एक घुमावदार नदी, पूर्व में घाटी को पश्चिम की पहाड़ियों से जोड़ती थी. वहां खड़ी पहाड़ियों के दोनों ओर जैतून और बादाम के पेड़ थे. घाटी के सिरे के पास, जहां नदी एक चट्टानी पहाड़ी के चारों ओर घूमती थी, वहाँ पर दो गाँव थे, जहाँ पत्थरों की कुछ सफ़ेद झोपड़ियां थीं और जानवरों के लिए बाड़े थे.

दोनों गाँवों के बीच की घाटी की ज़मीन में दो भाइयों के खेत थे. वहां की मिट्टी उपजाऊ और गहरी थी - खेती के लिए एकदम बढ़िया.

बड़ा भाई घाटी के किनारे के एक गाँव में रहता था. उसका घर दोनों भाइयों के खेत के ऊपर था. छोटा भाई दूसरे गाँव में रहता था जो घाटी से कुछ दूर एक मैदान में था. गाँवों को दो रास्ते आपस में जोड़ते थे - एक रास्ता पहाड़ी के ऊपर से होकर गुज़रता था और दूसरा घाटी की तलहटी से होकर.

हरेक पतझड़ में, पहली बारिश के बाद, दोनों भाई अपने-अपने गधों को लाते, और फिर दोनों मिलकर ज़मीन को जोतते और उसमें बीज बोते थे. सर्दियों में, अनाज अंकुरित होता और वसंत में वो बढ़ता था. फिर गेहूं की बालियां, दानों से लद जाती थीं और गर्मियां आने तक सुनहरी हो जाती थीं. फिर दोनों भाई हँसियों से गेहूं की कटाई और बिनाई करके अनाज को बोरियों में भरते थे.

काम पूरा होने के बाद दोनों भाई अनाज के बोरों को गिनते और फिर उन्हें बराबर आधा-आधा बांट लेते थे. दोनों पुआल को भी अपने- अपने जानवरों के बिस्तरों और खाने के लिए भी बराबर- बराबर बांटते थे.

फिर जब पतझड़ आती तब फिर से जुताई शुरू करने का समय आता था. इस तरह साल-दर-साल बीतते गए.

बड़े भाई ने शादी की और जल्द ही उसके कई बच्चे हुए जिनके खिलाने की ज़िम्मेदारी उस पर थी. सौभाग्य से फसल का उसका हिस्सा इतना होता था कि गेहूं सर्दियों तक पूर जाता था. बड़ा भाई बहुत संतोषी था. छोटे भाई ने कभी शादी ही नहीं की. कुछ लोगों के अनुसार उसे कभी सही महिला ही नहीं मिली. कुछ अन्य लोगों का कहना था कि छोटे भाई को शांत जीवन पसंद था. पर सच यह था कि छोटा भाई भी बहुत संतुष्ट था.

एक गर्मी, बहुत अच्छी फसल हुई. दोनों भाइयों ने अनाज के ढेर को बोरों में भरा: प्रत्येक को बीस-बीस बोरे मिले. बड़े भाई ने जब अपना काम खत्म किया तब उसने अपने छोटे भाई के हाल के बारे में सोचा.

"मैं बहुत भाग्यशाली हूँ क्योंकि मेरा एक परिवार है," उसने सोचा. "जब मैं बूढ़ा हो जाऊंगा, तो परिवार मेरी देखभाल करेगा. लेकिन मेरे गरीब भाई का कोई परिवार नहीं है. उसे अपने बुढ़ापे के लिए बचत करनी चाहिए. मुझ से ज्यादा, उसे इस अनाज की जरूरत है."

उसने अपने छोटे भाई को एक आश्चर्यजनक भेंट देने का फैसला किया. अंधेरा होने के बाद, उसने अपने गधे पर तीन बोरी अनाज लादा और उसे पहाड़ी पर से अपने भाई के गाँव तक ले गया. वो एक अँधेरी रात थी. रास्ता दिखाने के लिए न तो चाँद था और न ही तारे. लेकिन बड़े भाई को रास्ता अच्छी तरह से याद था. वो आँखें बंद करके भी छोटे भाई के घर पहुँच सकता था. वो दबे पांव गया और उसने छोटे भाई के गोदाम में घुसकर तीन गेहूं की बोरियां रख दीं. फिर वो अपने घर लौटा. सुबह इस भेंट को देखकर छोटे भाई के चेहरे पर ज़रूर मुस्कराहट आएगी? उसने सोचा.

अगले दिन, नाश्ते पर, बड़े भाई की पत्नी ने उससे फसल के बारे में पूछा.

"इस साल सिर्फ सत्रह बोरे गेहूं ही निकला," उसने कहा, "लेकिन अगर हमने सावधानी से उपयोग किया तो वो हमारे लिए पर्याप्त होगा."

पत्नी यह सुनकर काफी हैरान हुई. “केवल सत्रह ही क्यों? इस साल तो बड़ी बम्पर फसल हुई थी.”

पति ने सिर्फ अपना सर हिलाया और मुस्कुराया.

जब परिवार का नाश्ता खत्म हुआ, तब पत्नी ने गोदाम में जाकर जाँच की. वो कुछ पल बाद लौटकर आई.

"पतिदेव, क्या तुम इतने थक गए थे कि तुम सही गिनती करना भी भूल गए?"

"तुम्हारा क्या मतलब?" उसने पूछा.

"मैं अभी गोदाम में से आ रही हूं. वहां सत्रह नहीं, बल्कि बीस बोरे हैं."

"यह तो बिल्कुल असंभव है!"

लेकिन जब बड़ा भाई गोदाम में गया, तो उसने पत्नी की बात सच पाई. गोदाम में बीस अनाज के बोरे थे!

"ऐसा कैसे हो सकता है?" उसने आश्चर्य किया. "मैं जरूर कोई सपना देख रहा हूँ."

उस शाम, सूर्यास्त के बाद, बड़ा भाई अपने गोदाम से, तीन और बोरे, छोटे भाई के गोदाम में ले गया. इस बार, गधे को आराम देने के लिए, उसने घाटी वाला आसान रास्ता चुना. अगली सुबह नाश्ते पर, उसने अपनी पत्नी को बताया कि उनके पास केवल सत्रह बोरे ही होंगे, क्योंकि उसने तीन बोर दे दिए थे.

बड़े भाई अपनी उंगली अपने होंठों पर रखी. "वो एक रहस्य है," वो फुसफुसाया.

पर उसकी पत्नी ने उसे शक की निगाह से देखा. “क्या तुम्हें वाकई में यकीन है?" उसने पूछा.

"हाँ मुझे पूरा यकीन है. आओ, मैं तुम्हें दिखाता हूँ."

लेकिन जब वे गोदाम में गए तो वहां अभी भी बीस बोरे थे. वो देखकर उसकी पत्नी काफी नाखुश हुई.

"तुम मुझ से इस तरह क्यों मज़ाक कर रहे हो?" उसने मांग की. "तुम मुझे असली सच्चाई बताओ!"

"क्या वो कोई चमत्कार हो सकता है?" उसने सोचा, "या अब मैं बूढ़ा और भुलक्कड़ हो रहा हूँ?"

फिर तीसरी रात, सूर्यास्त के बाद बड़ा भाई, अपने छोटे भाई को तीन और बोरे देने के लिए निकला.

तीन दिन पहले, जब छोटे भाई ने अपने गेहूं के बोरों को गोदाम में उतारा तब उसने अपने बड़े भाई के बारे में सोचा. उसे कितने बड़ी परिवार को खिलाना पड़ता है? उसने कहा, "मेरे भाई के परिवार को मुझसे कहीं ज्यादा अनाज की जरूरत है," उसने कहा, "मुझे क्या करना चाहिए यह मुझे पता है. मैं बड़े भाई के गोदाम में कुछ अतिरिक्त बोरियां रखकर आऊंगा. उससे भाई को सुबह-सुबह एक अच्छा आश्चर्य मिलेगा.“

फिर अंधेरा होने के बाद उसने अपने गधे पर तीन अनाज के बोरों को लादा. तारों से भरे आकाश के नीचे, वो घाटी के रास्ते अपने बड़े भाई के गाँव पहुंचा, और उसने अनाज के उन तीनों बोरों को अपने भाई के गोदाम में रख दिया.

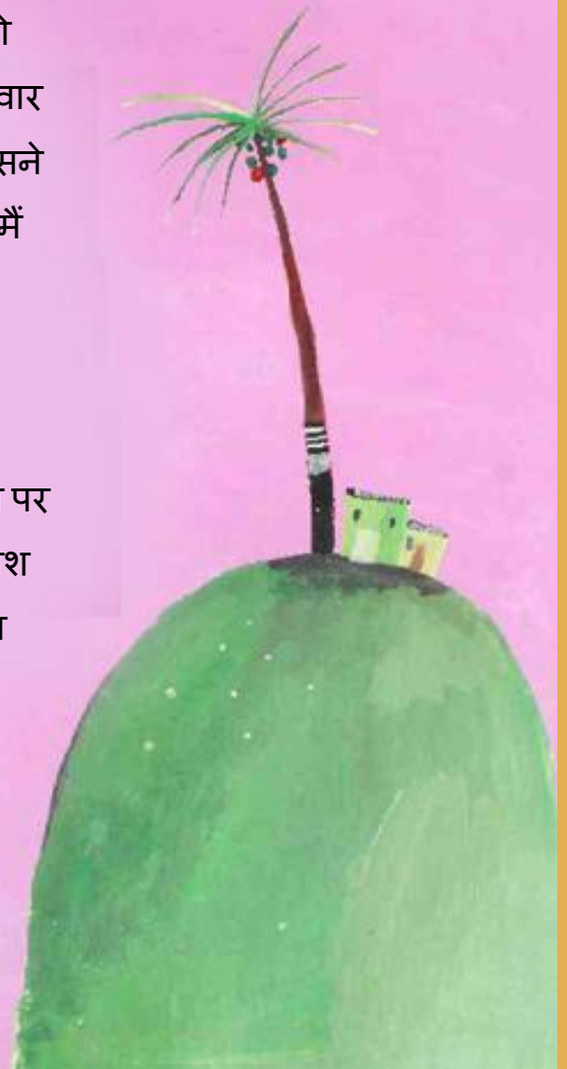

अगले दिन, छोटे भाई को कुछ अजीब लगा. उसके गोदाम में अनाज की बहुत सारी बोरियां थीं. उसने उन्हें गिना - वो पूरी बीस थीं. पर वो तीन बोरे अपने बड़े भाई के लिए लेकर गया. फिर वहाँ बीस कैसे हो सकते हैं?" क्या वो कोई सपना देख रहा था?

पूरे दिन वो हैरान रहा. फिर जब रात हुई तो उसने अपने गधे पर तीन और बोरे लादे, और वो अपने बड़े भाई की मदद करने के लिए चला. इस बार वो पहाड़ी के छोटे रास्ते से गया. उसने बड़े भाई के गोदाम में तीन और बोरे डाले और फिर घर वापस आया.

अगली सुबह, उसने फिर से अपने अनाज के गोदाम की जाँच की. वहां अभी भी बीस बोरे थे. "यह कैसे हो सकता है? क्या मैं कल्पना लोक में हूँ? उसने सोचा. "लेकिन आज रात मैं सच में अपने बड़े भाई की मदद करूँगा."

फिर उस रात तीसरी बार, वो अपने बड़े भाई के गाँव के लिए पहाड़ी के रास्ते गया. उस दिन पूरा चाँद था और रात में सभी चीज़े स्पष्ट नज़र आ रही थीं. जैसे ही वो पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा, उसने बड़े भाई को गधे के साथ अपनी ओर आते हुए देखा. उसे लगा जैसे मानो उसका ही प्रतिबिंब उसकी ओर चला आ रहा हो.

बिना कुछ बोले दोनों भाई अपनी-अपनी यात्रा का कारण समझ गए. उनके दिल ख़ुशी से भर गए क्योंकि उससे दोनों को, एक-दूसरे के प्रति अपने गहरे प्रेम का एहसास हुआ. दो गाँवों के बीच की पहाड़ी वो स्थान था जहाँ यरूशलेम शहर की नींव पड़ी. उस पुण्य स्थान पर जहाँ दोनों भाई मिले थे वहीं पर पवित्र मंदिर स्थापित किया गया.

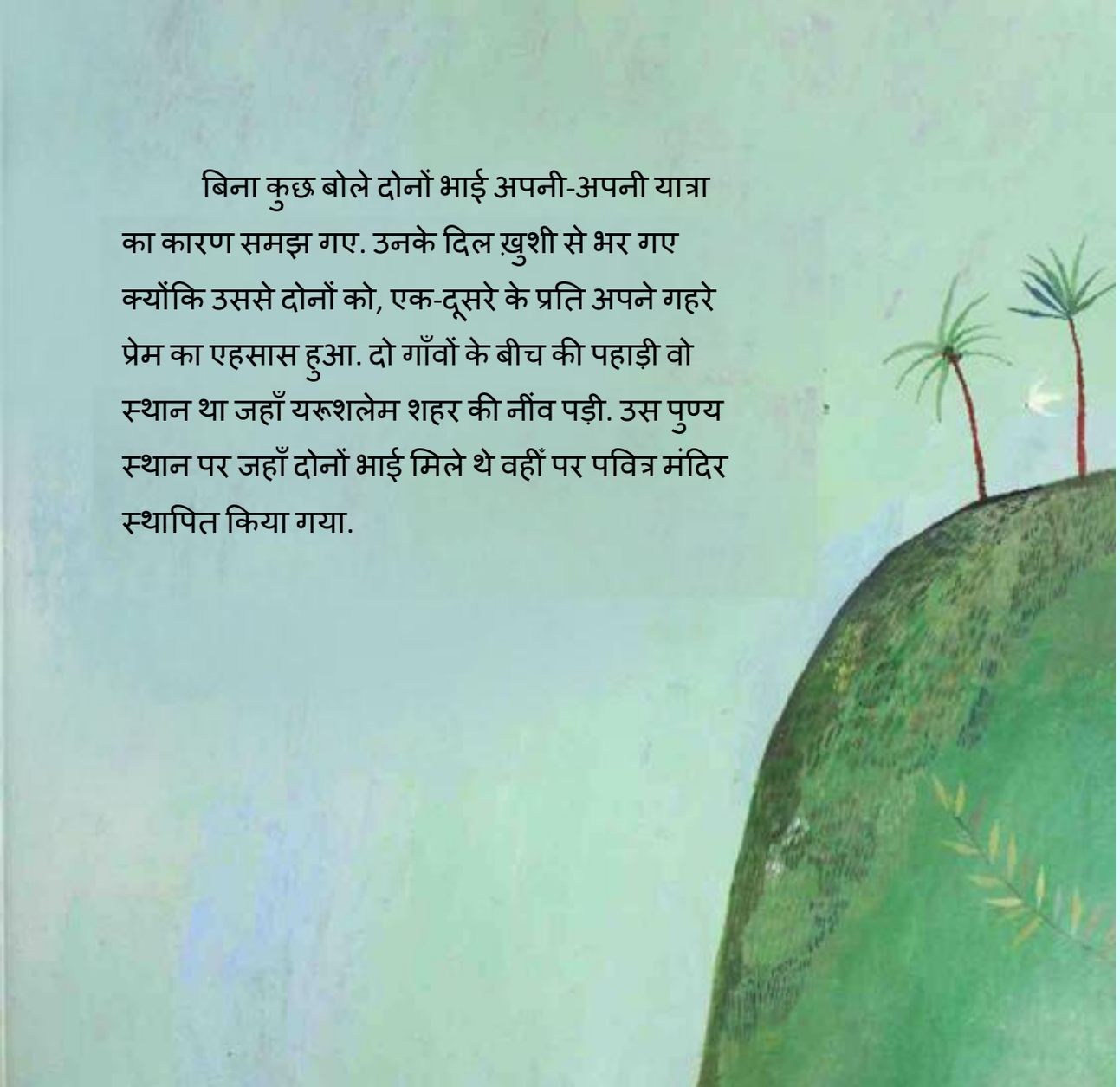

इन शब्दों के साथ, सुलैमान ने अपनी कहानी समाप्त की. कहानी सुनने के बाद दोनों भाई चुपचाप खड़े रहे. अदालत में हर कोई यह इंतजार कर रहा था कि अब वे क्या कहेंगे. कुछ देर के बाद, बड़े भाई ने ऊपर की ओर देखा.

"भाई," उसने कहा. "जो कुछ हमारे पिता छोड़ गए थे वो अब हमारा है. वो न तुम्हारा है, न मेरा है, बल्कि हम दोनों का है."

फिर भाइयों ने एक-दूसरे को गले लगाया और उन्होंने दरबार से प्रस्थान किया. तब से वे और उनके परिवार खुशी-ख़ुशी एक-साथ रहे. उनके बच्चों को कहानी सुनना पसंद था. पर सब कहानियों में उन्हें दो भाइयों की वो कहानी सबसे ज़्यादा पसंद थी जो राजा सुलैमान ने सुनाई थी.

यरूशलेम

यदि आप कभी यात्रा करें और उस स्थान पर पहुंचें जहां यूरोप एशिया से मिलता है, या जहां एशिया, अफ्रीका से मिलता है, तो वहां आपको रहस्य और इतिहास से परिपूर्ण एक शहर मिलेगा. शहर की दीवारों में, गली-मोहल्लों और बाज़ारों-कूचों में, आपको हर मोड़ पर प्राचीन, पूजा स्थल मिलेंगे. वहां सोने से जड़ी गुंबद वाली एक शानदार मस्जिद है, वहां चर्चों और चैपलों की भरमार है, और साथ में एक विशाल पवित्र दीवार भी है जहां हजारों लोग रोज़ाना प्रार्थना करते हैं.

हज़ारों सालों से दुनिया भर से तीर्थयात्री वहां पर प्रार्थना और पूजा करने के लिए आते हैं. उसका नाम? अरब, इस पवित्र शहर को अल-कुद्स के नाम से बुलाते हैं; हिब्रू में इसका नाम 'येरुशलायम" - और अंग्रेजी में **यरूशलेम** है.

शहर कैसे बना? कहानी में उसका जवाब छिपा है. यह यहूदी कथा दुनिया भर में सुनी जा सकती है. शहर के आसपास फिलिस्तीनी अरब लोग भी अपने बच्चों को यह कहानी एक अरब लोककथा के रूप में सुनाते हैं.

यह कहानी पहली बार लगभग दो सौ साल पहले यरुशलम के एक यात्री ने लिखी थी, जिसने उसे एक स्थानीय अरब किसान से सुना था. तब से, यह दुनिया भर में लोगों और स्थानों के बीच प्रचलित है. यह कहानी यहूदियों, इस्लाम या ईसाई धर्म की पवित्र पुस्तकों का हिस्सा नहीं है. फिर भी सैकड़ों कहानीकारों ने उसे ज़िंदा रखा है. शायद इस कहानी के प्रेम और भाईचारे के सन्देश ने उसे हजारों सालों से जीवित रखा है.

यरुशलम एक पवित्र शहर बना, जिसमें यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों की कहानियों और मान्यताओं का विशेष स्थान है. यरूशलेम वो स्थान है जहाँ अब्राहम रहता था और पूजा करता था, और जहाँ उसके पुत्र इसहाक और इश्माएल पैदा हुए. कहा जाता है कि यहूदी और अरब दोनों अब्राहम के ही वंशज हैं. यरुशलम वो शहर है, जहां पर राजा डेविड ने, अपनी गुलेल के वार से, गोलियत को हराने के बाद शासन किया था. उनके तुरंत बाद वहां पर सुलैमान ने शासन किया और उन्होंने ही महान मंदिर का निर्माण करवाया. मंदिर को बाद में आक्रमणकारियों ने नष्ट कर दिया.

बाद में यरूशलेम वो शहर बना जहाँ यीशु ने शिक्षा दी. और उसके भी बाद में वहीँ से पैगंबर मोहम्मद ने, ईश्वर का संदेश प्राप्त करने के लिए स्वर्ग की अपनी पवित्र यात्रा की, और फिर वहां पुराने मंदिर की साइट पर, दो शानदार मस्जिदें बनवाईं.

तब से यरूशलेम ने कई युद्ध देखे हैं. अरब, तुर्क और यूरोपीय सभी ने वहां लड़ाईयां लड़ी हैं. आज भी वो शहर विवादित है. इस्राइली और फिलिस्तीनी दोनों उस शहर पर अपना दावा पेश करते हैं. किसी को यह नहीं पता है कि वहां कब शांति बहाल होगी. अगर आज राजा सुलैमान ज़िंदा होते, तो वह इस कहानी के ज़रिए विवाद को सुलझाने का कोई रास्ता ज़रूर दिखाते.

समाप्त